प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

फसल अनुसंधान केन्द्र पर कुलपति ने वैज्ञानिकों को दिये महत्वपूर्ण सुझाव

पंतनगर। 01 अप्रैल, 2019। पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. तेज प्रताप ने आज विश्वविद्यालय के नारमन ई. वारलॉग फसल अनुसंधान केन्द्र पर विभिन्न अखिल भारतीय परियोजनाओं में संचालित शोध कार्यों का विस्तृत रूप से अवलोकन किया। इस अवसर पर उनके साथ निदेशक शोध, डा. एस.एन. तिवारी एवं संयुक्त निदेशक, डा. वी.पी. सिंह एवं अन्य वैज्ञानिक उपस्थित थे।

कुलपति ने केन्द्र का अवलोकन करने के पश्चात् कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई उच्च गुणवत्तायुक्त किस्मों का कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए, जिससे पर्वतीय क्षेत्रों के उत्पादन में वृद्धि की जा सके। कुलपति ने यह भी सुझावित किया कि जलवायु परिवर्तन के अनुरूप तकनीक का विकास किया जाना आवश्यक है जो कि मृदा संरक्षण में भी सहायक हो। कुलपति ने भविष्य में नैनो एवं प्लाज्मा टैकनॉलोजी पर चर्चा करते हुए यह आशा व्यक्त की कि इसको शोध में वृहद कार्यक्रम के रूप में अपनाया जाएगा। कुलपति द्वारा केन्द्र पर अवलोकित की गयी फसल संरक्षण पद्धति पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा गया कि इस प्रकार कि संरक्षित तकनीक का उपयोग किया जाना अति आवश्यक है जिससे कम लागत में अच्छा उत्पादन प्राप्त कर पर्यावरण संरक्षण एवं कम ऊर्जा के व्यय से किसान लाभान्वित हो सके। कुलपति ने सुझावित किया कि मृदा नमी संरक्षण हेतु कार्बनिक पलवारों का प्रयोग एवं लघु उत्पादों के विपणन एवं लघु कृषकों को अधिक लाभ प्रदान करने हेतु विपणन व्यवस्था सुनिश्चित एवं सुनियोजित होनी चाहिए और ग्रीष्मकालीन धान की खेती के स्थान पर मक्का के हरे भुट्टे के लिए खेती किये जाने हेतु कृषकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। डा. तेज प्रताप ने यह भी कहा कि मक्का के उत्पादन के साथ-साथ उसकी गुणवत्ता पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए एवं कृषकों की आय बढ़ाने हेतु उन्हें बेबी कार्न की खेती के लिए प्रोत्सहित किया जाना चाहिए। कुलपति ने कहा कि मक्का की अन्तः-फसलीय खेती के रूप में दलहनी फसलों को उगाकर आय वृद्धि, नमी संरक्षण एवं मृदा की उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है।

केन्द्र पर गेहूँ एवं जौ प्रजनक परियोजना अधिकारी, डा. जे.पी. जायसवाल, ने गेहूँ की कुल 29 विकसित प्रजातियों का कुलपति को अवलोकन कराया। उन्होंने अन्य वित्तीय संस्थाओं द्वारा पोषित विभिन्न परियोजनाओं में चल रहे शोध कार्यों की विस्तृत रूप से जानकारी उपलब्ध करायी तथा यह भी अवगत कराया कि कंडुवा एवं उच्च तापक्रम की प्रतिरोधी प्रजातियों का विकास किया जा रहा है। गेहूँ में ही सस्य विज्ञान के तहत परियोजना अधिकारी, डा. डी.एस. पाण्डेय, द्वारा कंट्रोल उर्वरक तथा एग्री वेस्ट मैनेजमैंट एवं यूरिया आधारित बायोचार खाद निर्माण तथा खाद के तुलनात्मक अध्ययन से भी कुलपति को अवगत कराया गया। धान-गेहूँ फसल प्रणाली में गेहूँ उत्पादक तकनीक के विषय में शोध अध्येता सिराजुद्दीन एवं परियोजना अधिकारी डा. वी.पी. सिंह द्वारा कुलपति को फसल संरक्षण पद्धति से अवगत कराया। तत्पश्चात् दलहन प्रजनन परियोजना के तहत डा. एस.के. वर्मा द्वारा चना, मसूर की विकसित प्रजातियों की विशेषताओं पर चर्चा करते हुए वर्तमान में संचालित प्रजनन शोध कार्य पर विस्तृत रूप जानकारी दी गयी। समन्वित कृषि प्रणाली परियोजना के तहत चलाये जा रहे कार्यक्रम के विषय में जानकारी डा. सुभाष चन्द्र द्वारा दी गयी, जिसके तहत सीमांत कृषकों के प्रक्षेत्रों पर समन्वित कृषि प्रणाली को बढ़ावा दिया जाना अति आवश्यक बताया। डा. अमित भटनागर द्वारा मक्का परियोजना प्रक्षेत्रों का अवलोकन कराया गया। डा. पी.सी. श्रीवास्तव द्वारा केन्द्र पर संचालित सूक्ष्म पोषक तत्वों पर चल रहे शोध कार्यों का अवलोकन करते हुए सुझावित किया गया कि गेहूँ में जिंक एवं बोरोन तथा सरसों में जिंक व बोरोन के साथ-साथ सल्फर भी सरसों की गुणवत्ता एवं उत्पादकता बढ़ाने में अत्याधिक प्रभावकारी होते हैं।

इस भ्रमण के दौरान विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत वैज्ञानिकों डा. तेज प्रताप, डा. अनिल कुमार, डा. स्वाती सिन्हा, डा. वी.सी. ध्यानी, डा. एस.के. वर्मा, डा. वी.पी. सिंह, डा. सुमित, डा. राजीव शुक्ला, डा. एस.पी. पचौरी, डा. एस. पी. सिंह, डा. डी.के. सिंह, डा. क्वात्रा, डा. अंजु अरोरा, इत्यादि भी उपस्थित थे।

फसल अनुसंधान केन्द्र पर गेहूं के प्रक्षेत्र का अवलोकन करते कुलपति, डा. तेज प्रताप।